Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

फणीश्वरनाथ 'रेणु' के कहानियों में आर्थिक समस्या

डॉ. महेशकुमार ए. खांट

makhant86@gmail.com

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

रेणु जी के कथा-साहित्य में ग्रामीण जीवन की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिवेश के चित्रण के साथ साथ आर्थिक समस्या का भी चित्रण हुआ है आर्थिक व्यवस्था की दृष्टि से रेणु जी ने युगों युगों से शोषित किसान मजदूरों की एक सही तस्वीर अपने कथा-साहित्य में प्रस्तुत की है। उन्होंने आर्थिक दुरव्यवस्था से पीड़ित मनुष्य का अत्यन्त ही कारुणिक चित्र प्रस्तुत किया है।

'इतिहास, मजहब और आदमी' कहानी में सामाजिक मार्मिक तथ्य को अंकित किया गया है। मनमोहन के परिवार में उसके एक्लीते जवान बेटे की मृत्यु हो जाती हैं। समाज के रश्म, रिवाज के मुताबिक श्राद्ध की पूजा विधि ब्राह्मण दिनमनि के पास करवाते है उस व्यक्त मनमोहन के परिवार में पैसा की जरूरत होती है - "पंडितजी पुनः एक वार थूक्कर, जोर-जोर से हँसने लगे। मनमोहन को सिर्फ दो घंटे पहले की बात याद आगई । महा कंगाल चेथर मंडल रो रोकर कह रहा था कि पंडित दिनमनि ने लूट लिया। उसके एकलौते जवान बेटे के श्राद्ध में ५ रूपए दक्षिणा तो लिया ही, जबर्दस्ती एक गाय भी खोलकर ले गया। स्त्री के श्राद्ध में अँगूठे का निशान लेकर जी नहीं भरा तो छप्पर पर से कोहड़े शाक भाजी भी नोपाकर ले गया...। "१

मनमोहन के अपने बेटे के श्राद्ध की पूजा विधि में ब्राह्मण के लिए दान दक्षिणा देने के लिए भी पैसा नहीं रहता है। इसलिए इस कहानी 'इतिहास, मजहब और आदमी' में आर्थिक समस्या उभरकर सामने आती है।

'उच्चाटन' कहानी में नगरोन्मुखता का आर्थिक ही है। इस कहानी में हलवाए। विलसवा शहर में जाकर रिक्शा चलाता है और विलसवा से रामविलास सिंह हो जाता है। शहर से गाँव लौटकर नगर की चमक-दमक का वह ऐसा आकर्षक चित्र प्रस्तुत करता है कि अधिकांश ग्रामीण युवक उसके साथ शहर चलने को आकुल हो उठते हैं। शहर से वापस आकर वह 'मरकट महाजन' बूढे मिसिर को भी मात कर देता है। वह दिन-भर चाय, बीड़ी और ताश में डुबा रहता है और रात में अंगरेजी दारू चलती है। रजिन्नर नगर की बात सुनते ही उसके साथी रोमांचित हो जाते हैं। हलवाहों का मन शहर में जाने को मचलने लगता है, उन्हें गाँव से उच्चाटन हो जाता है। उन्हें अपना पेशा अत्यन्त ही हीन और धृणित लगने लगता है और सभी शहर की

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

और भागने को लालायित हो उठते हैं "भला कौन जवान रहना चाहेगा, इस मनहूस गाँव में?"

'विघटन के क्षण' कहानी में भी पलायन की इस पीड़ा की अभिव्यक्ति की है। गाँव के कई सम्पन्न किसान भी गाँव से नाता रिश्ता तोड रहे हैं, क्योंकि शहर में उनकी आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी है। इस कहानी के रामेश्वर चौधरी पिछले कई वर्षों से सपरिवार पटना में रह रहे हैं "छिटपुट जमीन यानी आधीदारी पर लगी हुई जमीन की हर साल विक्री करके रामेश्वर वावु अत 'निझंझट' हो गये है, खुदफरत में थोड़ी सी जमीन है, पोखर और बाग-बगीचे हैं। जिस दिन कोई ग्राहल लग जाय, बेचकर छुट्टी! छुटी... माने, इस रानीडिए गाँव से, अपनी जन्मभूमि, से लगाव नहीं किसी तरह का सम्बन्ध नहीं रखना चाहते रामेश्वर बाबू। पिछले पन्द्रह साल से रामेश्वर बाबू पटना में रहते हैं पटना के एम. एल.ए. क्वार्टर में। अब राजेन्द्र नगर में घर बनवा रह है। इस बार सम्भव है पार्टी टिकट नहीं मिले। किन्तु अब गाँव रानीडिए लौटकर नहीं आ सकते । किसी गाँव में नहीं रह सकते। " २ रामेश्वर बाबू का अब वर्ग चरित्र बदल गया है। किसानी का पेशा उन्हें हीनता का लगता है । वे शहेरी हो चूके है। गाँव के प्रति उनका लगाव समाप्त हो चूका है। शिक्षित ग्रामीण लोग धीरे-धीरे शहरों में बस चुके हैं। लोग जीवन के प्रति राग समाप्त हो गया है। इसका मुख्य कारण है गाँवों से शहरों की बेहतर आर्थिक स्थिति ।

'बटवावा' कहानी में अनन्त मंडर की पतोहू के बारे में बताते हैं कि उसके शरीर पर सिर्फ एक फटी साड़ी थी, जिसमें पाँच सात पैवन्द लगे थे, चार पाँच साड़ी के टुकड़ो की पट्टियाँ तथा दो ढाई हाथ कंट्रोल की साडी, सुहाग की साडी का एक टुक्डा तथा अन्य साडियों के टुकडों की पट्टियों से बनी पंचरंगी साडी से अपनी लाज ढ "कते, आँसू पोंछते वह बोली थी, "बाबा! अब इससे बढकर और कौन सी सजा दोगें।" और वह फूट फूटकर रो पड़ी थी। निरधन साहू की बेटी लछमनिया भी रो आयी थी बाबा! गाँव मुहल्ला, टोला-पडोस तथा जाति बिरादरी के लोग हँस रहे हैं। मैं इतनी बड़ी हो गई, कोई दुल्हे का वाप एक हजार से नीचे तिलक की बात ही नहीं करता है। बाबू और घर की दशा तुमसे छिपी नहीं है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

यह है आर्थिक दुरावस्था का हृदय विदारक दृश्य । रेणु की कहानियों में ऐसे निर्धन पात्र भरे पड़े हैं। आर्थिक बदहाली को चित्रित करते हुए 'बटबाबा' कहानी महत्त्वपूर्ण रही है।

'पहलवान की ढोलक' कहानी में लुट्टन सिंह पहलवान की कहानी है, जिसे राजाश्रय मिला हुआ था । लेकिन जब वृद्ध राजा साहब स्वर्ग सिधार गए तो राजकुमार ने राज्य कार्य अपने हाथ में ले लिया और पहलवान के भोजन आदि पर खर्च आदि को देखकर, उसे फालतू समझकर निकाल दिया। वह अपने दोनों बेटों के साथ अपने गाँव में रहने लगा और गाँव के नौजवानों तथा चरवाहों को कुश्ती सिखाने लगा। खाने की व्यवस्था गाँववाले करते थे । गाँव के किसान और खेतिहर मजदूर के बच्चे भला क्या खाकर कुश्ती सीखते । धीरे धीरे पहलवान का स्कूल खाली पडने लगा। अन्त में, अपने दोनों पुत्रों को ही वह ढोलक बजा बजाकर लडाता रहा, सिखाता रहा दोनों लड़के दिन-भर मजदूरी करके जो कुछ भी लाते उसी में गुजरान चलता था । इसलिए कहानी आर्थिक उपार्जन्य में दोनों बेटे को कुछ वेतन मिलता उसे अपना गुजरान चलाता है आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है।

'एक लोकगीत के विद्यापति' कहानी में पूर्णिया सहरसा के इलाके का कनचीरा गाँव एक ऐसा गाँव है, जिस पर दो दो जिला के अधिकारियों का शासन चलता है, आधा गाँव सहरसा में और आधा गाँव पूर्णिमा में। कनचीरा की विद्यापति मंडली का नाम दोनों जिले में नामांक्ति एवं प्रसिद्ध है। विद्यापति मंडली के नायक जनकदास हैं 'विद्यापति नाच मंडली के नाम पर, खर्च करने के लिए हजार दो हजार सरकार के खजाने से लेकर मैं निकला हूँ। रात भर वेशभूषा पहनकर राधा-कृष्न, गोपी, ग्वाल बनकर गाय चरानेवाला लडके पदावली गा-कर नाचते है उसी मंडली में पैसा मिलता है उसीसे उनकी आर्थिक समस्या का मिट जाती है विद्यापति की पदावलि गाने से भी पैसा मिल जाता है।

जनकदास को बेटी वेवा कहती विद्यापति पदावली को गजट में छापी होती उसका पैसा जरूर जादा मिलता है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

'अच्छे आदमी' कहानी में उत्तर जोगबनी फारबिसगंज से जानेवाली गाड़ीया प्रदीपकुमार के घर और दुकान के सामने चा पानी नास्ता के लिए दस पन्द्रह मिटर रुकती है। इस (लाइन) सड़क में उजागिर की दूकान के पकौड़े और चाय का वहुत नाम कमाया है, सादा, खाकी और लाल गाडियों के ड्राइवर कंडक्टर पसिंजर क्लिनर सभी तारीफ करते हैं। जातिवालों ने मिलकर बूढे सन्तोसीसिंघ को बहिष्कृत कर दिया है इसलिए सन्तोसीसिंघ कहता है "जाति का हुक्का पानी छूटे, मगर सन्तोसीसिंघ उजागिर की दूकान की चाय और पकौड़े को नहीं छोड़ सकता। और अब तो पकौडं चाय खा पोकर ही वह सारा दिन रहता है। न आगे नाथ, न पीछे पगहा । सन्तोसीसिंघ रिटायर्ड दफादार है। "३

बारिस की मौसम पकौड़े और चा की विक्री बढ जाती है। लाल गाड़ी का ड्राइवर अच्छा आदमी है। मनिहारी घाट में जहाज से यात्रिकों को भी वह उजागिर की दुकान की पकौडी और चाय की तारीफ सुनाकर फाँस लाता है "भाई, रास्ते में चाय पीना और पैसा फेंकना बराबर है। चाय, नाश चलकर रहिकपुर में कीजिएगा। एक बार चखकर देखिएगा, तो फिर कभी नहीं भूलीएगा। गर्मागर्म चाय और कुरमुरे पकौड़े । " ४

उजागिर एक नौकर बनकर प्रदीपकुमार के दूकान में काम करता था। धंधा छोड़कर दुल्हन की खोज निकल पड़ता है बस में बैठकर बिरौली पहुंचता है सहुसाइन के दूकान में चा नास्ता करता है। उजागिर सीता को देखकर ही आकर्षित हो जाता है वह उजागिर रहिकपुर में जाकर चाय की दूकान खोलता है छ महिने तक धंधा करता है वह छोड़कर सहुसाइन की बेटी सीता को लेकर रानीगंज से कुरसेला जानेवाली बस पर सतार होकर, उपवाली दुल्हन को साथ लेकर उजागिर गाँव लोडता हो गाँव आकर उजागिर चा नास्ता की दूकान खोल कर धंधा करता है ।

'अच्छे आदमी' कहानी में आर्थिक समस्या थी उजागिर, प्रदीपकुमार जैसे लोगो अपना जीवन जीने के लिए चा नास्ता की दूकान खोलकर स्वतंत्र धंधा करते हैं। आर्थिक समस्या थी वह उलझ जाती है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

संदर्भ सूचि

१. इतिहास, मजहब और आदमी, फणीश्वरनाथ रेणु, पृ.७८

२. विघटन के क्षण, फणीश्वरनाथ रेणु, पृ.४४७

३. अच्छे आदमी, फणीश्वरनाथ रेणु, पृ.३०४

४. वहीं, पृ.३०७